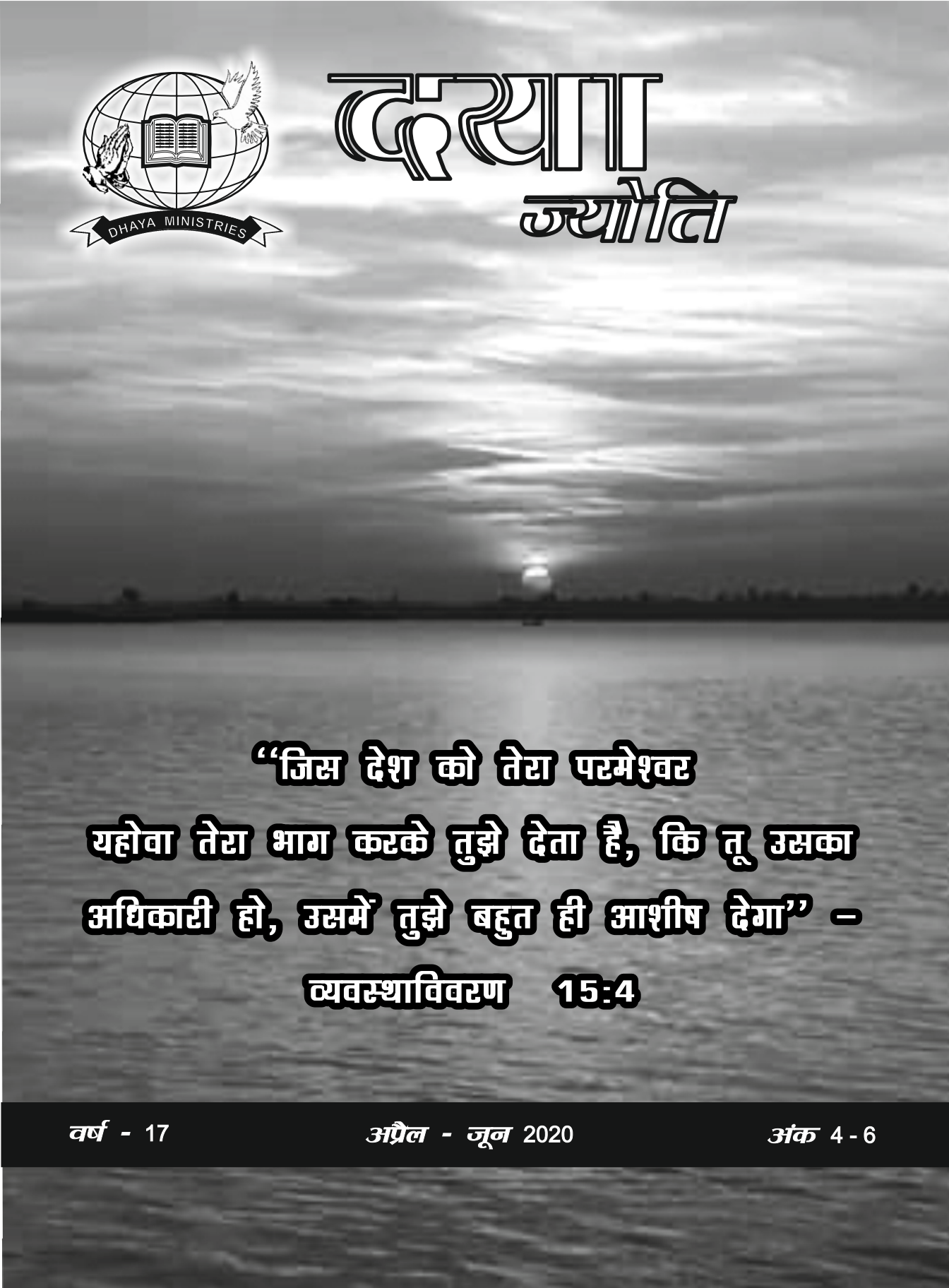

दया ज्योति

DHAYA MINISTRIES

"जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो, उसमें तुझे बहुत ही आशीष देगा" –

व्यवस्थाविवरण 15:4

वर्ष - 17 *अप्रैल - जून* 2020 *अंक* 4 - 6

सम्पादक की कलम से.....

सर्वसृष्टिकर्ता के मधुर नाम से आप सभी को अभिवादन! प्रभु यीशु मसीह के द्वारा नया बल, सामर्थ्य और शक्ति आप सभी को मिलते रहने के लिये निरन्तर प्रार्थना करते है। जिसने आपको प्रभु यीशु मसीह में चुना है कि आप उसके निज वारिस बनें। यह हमारी योग्यता के अनुसार नही अपितु प्रभु परमेश्वर की कृपा से संभव हुआ है।

परमेश्वर ने हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा – (रोमियों 5:8)। हो सकता है कि कोई धर्मी के लिये मरने का प्रयास कर सकता है। लेकिन जब हम पापी ही थे, तब ही यीशु हमारे लिये मरा। हम ने उसे नही चुना, लेकिन उसने हमे यीशु मसीह के द्वारा चुन लिया। इसलिये यीशु ने कहा – ''तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है'' (यूहन्ना 15:16)। उसने हमे जगत की उत्पत्ति से पहले चुन लिया है। ताकि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों। उसने हमे इस मनसा से बुलाया कि उसके गुणों को प्रकट करें। पुत्र पिता के गुणों को प्रकट करता है। इसलिये पिता परमेश्वर को यह पसन्द आया कि वे अपने लिये बहुत से पुत्रों को नियुक्त करें। अतः उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। इसलिये हमको यीशु मसीह के लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जो अनुग्रह हम ने पाया है, उसे हम अपने तक सीमित न रखें। यदि हम ऐसा करते है, तो हमारे जैसा कोई स्वार्थी नही है।

हमारा बचना प्रयाप्त नही किन्तु दूसरों को भी बचाना है। इसलिये दया सेवकाई ने योजनायें बनाई है, मिश्न फिल्ड़ों की 50 क्षेत्रों में निवास करने वाले बच्चें, नवज़वानों और किशोर अवस्था में रहने वालों को प्रभु परमेश्वर के प्रेम के बारे VBS प्रोग्राम द्वारा अवगत करवायें। प्रत्येक क्षेत्र में फल– आहर, भेट, नोट, पैन, पैनसील एवं चित्रकारी पुस्तक बाँटने का खर्च रू.5,000/– आयेगा। कुल क्षेत्रों का खर्च रू.2,50,000/– आयेगा। पाठकों से अनुरोध है, कि अपना हाथ बढ़ायें ताकि हम सभा मिलकर दूसरों को बचा सकें। जिस से परमेश्वर का राज्य का विस्तार हो सकें। आमीन्।

प्रभु यीशु की सेवा में

आपका प्रिय भाई आलफ्रेड डेनियल

''मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है'' – भजन 121:2

जूआ तोड़ डालूँगा

भाई आलफ्रेड डेनियल

सम्पूर्ण संसार भर में देखेंगे, तो कोई भी मनुष्य जूआ सहन करना या उठना नही चाहते है। सभी जूआ से स्वतंत्र होना चाहते है। जूआ कई प्रकार की होती है, जैसे उधारी, बिमारी, बलहीनता, श्राप, कमजोरी और गुलामी। परमेश्वर चाहता है कि उसके बनाये गये, मनुष्य आशीष, आरोग्यता, स्वतंत्रता के संग जीवन व्यापन करें। इसलिये परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप और अपनी समानता के अनुसार में बनाया। ताकि वे फूले-फले और पृथ्वी में भर जाये और सब सृष्टी पर अधिकार रखें। जब तक मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा पर चल रहे थे, तब तक परमेश्वर के संग चलते और सब सृष्टी पर अधिकार जताते थे। सब सृष्टी उसके आधिन में थी।

जिस दिन मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर सर्प की बात मानी, तब से मनुष्य पाप के जूआ के नीचे आ गया। पाप ने मनुष्य पर अधिकार चलाना शुरू कर दिया। जिसके कारण से मनुष्य पाप की गुलामी में आ गया। इसलिये मनुष्य जो चाहता है, उसे कर नही पाता लेकिन जो नही चाहता है, उससे हो जाती है। उसका करने वाला मनुष्य नही है, लेकिन जो पाप उसमें बसा हुआ है, वह उससे करवाता है।

परमेश्वर की आज्ञा न मानना पाप है। पहला आदम ने परमेश्वर की आज्ञा से बढ़कर सर्प की बात मानी। जिसके कारण से उसने पाप किया। जब उसने पाप किया तब उस पर दण्ड की आज्ञा प्रकट हुई। उसने आशीष, आरोग्यता, स्वतंत्रता के बदले श्राप, कमजोरी, बिमारी, बलहीनता और गुलामी का शिकार हुआ। जिसके कारण उसकी स्वतंत्रता उससे छीन ली गई, और वह पाप का गुलाम हो गया। जो कार्य उसने किया है, उसकी मजदूरी उसे मिली। पाप की मजदूरी मृत्यु है।

मनुष्यों ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए। इसलिये परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया। पाप करने से पहला मनुष्य ने अपनी आशीष खोकर श्राप के आधिन में आ गया। मनुष्य पाप, श्राप, कमजोरी, बलहीनता, बिमारी एवं मृत्यु की जूआ के नीचे आ गया। जो उसके उठाने के सहन से अधिक भरी थी। परमेश्वर ने उसके निवार्ण के लिये अपना एकलौत पुत्र यीशु मसीह को जगत की पाप उठाने के लिये भेजा। प्रभु यीशु को अपनी ओर आते देखकर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)।

यीशु ने जगत के पाप अपने देह पर लिया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, 'जिससे हम पापों

के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ' (1 पतरस 2:24)। जब तक हम पापों के लिये नही मरेंगे, तब तक धार्मिकता के संग जीवन नही बिता पायेंगे। इसलिये अपराध स्वीकार करना बहुत जरूरी है। फिर स्वीकार करना प्रयाप्त नही, उसे मानकर छोड़ भी देना बहुत जरूरी है। तब ही परमेश्वर से दया प्राप्त कर पायेंगे (नीति. 28:13)। अनेक अपने पाप को स्वीकार ही नही करते है। और कहते है कि हमने कोई भी पाप नही किया है। इन्हें बाईबल बतलाती है, ''यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:8,9)।

यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते है, और उसका वचन हम में नहीं है। एक मनुष्य के पाप करने से सारी जगत में पाप आ गई। जो भी इस संसार में पैदा होता है, वह पाप से पैदा होता है। भक्त दाऊद ने कहा, ''मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा'' (भजन 51:5)। अगर पैदा होनेवाला बच्चा ही पाप से पैदा होता है, तो कैसे कोई कह सकता है कि 'मेरे अन्दर पाप नही है' ? यदि कहता है, तो अभी तक उसको एहसाह नही हुआ कि उसके फ़ितरत में पाप झुपा हुआ है, और वह जानना ही नही चाहता है। जब तक वह नही जानेंगा तब तक कैसे अंगीकार करेंगा ? पहले जानना जरूरी है कि उसके अन्दर पाप है। जिसका जूआ उसके ऊपर है। इसके कारण जो कुछ वह करता है उसे वह नही करता। उसके अन्दर में रहने वाला पाप उससे करवाता है। इसलिये पाप की आधिनता का जूआ तोड़ना जरूरी है। जब तक नही तोड़ेंगे, तब तक पाप उस पर क्रियाशिल करता ही रहेंगी। पाप का जूआ यीशु ने क्रूस की मृत्यु से तोड़ दिया। लेकिन जब तक हम यीशु पर विश्वास नही करेंगे, तब तक पाप का जूआ तले बने रहेंगे।

परमेश्वर ने जगत की उद्धार के लिये ''अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए'' (यूहन्ना 3:16,17)। परमेश्वर ने पाप के जूआ को तोड़ने के लिये नियम एवं विधि बनाकर रखा दिया है। जिसके द्वारा से लोग पापों के जूआ से आजाद हो सकते है। सिर्फ उन्हें परमेश्वर के पुत्र यीशु पर विश्वास करना है कि ''मेरे पापों के लिये ही यीशु मरा गया है''। क्योंकि बाईबल बतलाती है, ''जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा'' (रोमियों 10:13)। जिसने उस पर विश्वास नही किया तो उसका नाम कैसे लेगा ? जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो उसका निश्चय उद्धार होता है। विश्वास मन से किया जाता है, अंगीकार मुँह से किया जाता है। जब तक मन मे विश्वास नही आयेंगा, तब तक मुँह से कैसे कह पाएगा, 'सिर्फ यीशु ही प्रभु है'। जो मान लेते है कि यीशु ही प्रभु है, उनका पाप का जूआ टूट जाता है,

क्योंकि यीशु ने पाप का जूआ क्रूस पर तोड़ दिया है। उस से उन्हें पाप से स्वतंत्रता मिल जाती है। क्योंकि उनके अन्दर यीशु का जन्म हुआ है। ''जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता'' (1 यूहन्ना 5:18)। क्योंकि उसके अन्दर से पाप की व्यवस्था का अन्त हो गया है।

परमेश्वर ने यीशु को वह नाम दिया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है। जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें (फिलि. 2:9,10)। यीशु के नाम में सामर्थ्य है, उसके नाम से जूआ टूट जाता है। उसके नाम से दुष्ट आत्माऐं, अशुद्ध आत्माऐं डरती एवं काँपती है। विश्वास के संग उसके नाम उपयोग करने से शैतान एवं दुष्ट आत्माऐं डरकर निकाल कर भागती है और लोग शैतान एवं दुष्ट आत्माऐं के जूआ से आजाद होते है। जो दुष्ट आत्माऐं और शैतानी आत्मा से पीढ़ित रहते है, वे अपने आपको घायल करते है, और किसी के वंश में नही रहते और उनका मन उनके नियन्त्रण में नही रहता, वे सद् बुद्धि से कार्य नही कर पाते है और उनका मन ठीकने पर नही रहता है। ऐसो को यीशु का नाम ही छुटकारा देता है। जिन्हें कोई ठीक नही कर सकते है, उन्हें यीशु का नाम मात्र ही आरोग्य कर देता है। शैतानी एवं दुष्ट आत्माऐं के जूओं से उन्हें मुक्ति यीशु का नाम देता है। क्योंकि यीशु ने विधियों का लेख जो हमारे नाम पर था उसे क्रूस के कीलों में जड़कर सामने से हटा दिया है और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाश बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई (कुलु. 2:14,15)।

यीशु ने सारी प्रधानताओं और अधिकारों के ऊपर जय प्राप्त किया। शैतान की सारी अधिकार को यीशु ने क्रूस की मृत्यु से जीत लिया। इसलिये सारी प्रधानताऐं, ताकते यीशु के नाम से काँपती एवं घबराती है। शैतान के द्वारा आने वाला हरेक जूआ यीशु के नाम से टूट जाता है। यीशु के नाम में परमेश्वर ने वो सामर्थ्य दिया है, जिसके नाम के द्वारा रोगी चंगे होते है, बलहीन बल पाते है, कोढ़ी शुद्ध होते है, अन्धे देखते है, लगड़े चलते है, मुर्दे जीलाये जाते है कंगालो को सुसमाचार सुनाया जाता है। यह सब प्रभु यीशु के नाम मात्र से होता है। यीशु के नाम में वो सामर्थ्य है, जिसके द्वारा सारा जूआ टूट जाता है और लोग स्वतंत्र होते है। यह सिर्फ यीशु के नाम पर विश्वास करने के माध्यम से ही क्रियाशील होती है।

यीशु के लहू में सामर्थ्य है, जो जूआ को तोड़ देती है। यीशु मसीह का लहू के बारे में समझने से पहले, यह जानना जरूरी है कि उसका जन्म कैसे हुआ? छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल, गलील के नासरत नगर में, एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थीः उस कुँवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, ''आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है। प्रभु तेरे साथ है'' वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवदन है? स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।

देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा और परमप्रद्यान का पुत्र कहलाएगा, और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। मरियम ने स्वर्गदूत से कहा – ''यह कैसे होगा। मैं तो पुरूष को जानती ही नही।'' स्वर्गदूत ने उसको कहा – ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रद्यान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा (लूका 1:26-35)।

यीशु पैदा होते वक़्त भी पवित्र था, इसे हमने ऊपर पढ़ा। पवित्र आत्मा की सहायता और परमप्रधान की सामर्थ्य से ही यीशु मसीह पैदा हुआ। जब वह पैदा हुआ, तब भी उसमे कोई पाप नही था। पाप को उठा ले जाने वाला मेम्ना बनकर यीशु आया। उसने अपना लहू क्रूस में बहाया, जिसके द्वारा हमे मुक्ति, छुटकारा, आशीष मिली। यीशु की लहू से सारे पापों की क्षमा मिलती है, बिमारी, रोग, बलहीनता से छुटकारा मिलती है, और श्रापों से मुक्ति एवं आशीष पाते है। यीशु मसीह के लहू में इतना सामर्थ्य है, जिसके द्वारा जादू-टोना भी असर नही करता है। यीशु का लहू सारे महारोग से, महामरी से, भय एवं डर से सुरक्षा प्रदान करती है। शैतानी गतिविधि को रोक थाम यीशु की लहू करती है। यीशु की लहू की जय, जो हमे शुत्रओं की हरेक युक्ती, चलाकी, धूर्त्ता से जयवन्त करता है।

यीशु हमें पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)। मसीह का लहू को जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवके को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा (इब्रा. 9:14)। मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुडाया (गला. 3:13)। परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है (1 कुरि. 15:57)। ताकि अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करे (1 कुरि. 6:20)।

पवित्र आत्मा का अभिषेक जूआ को तोड़ देता है। इसलिये पवित्र आत्मा का अभिषेक की भरपूरी पाना अत्याधिक आवश्यक है। पवित्र आत्मा जो परमेश्वर की आत्मा है, उसके द्वारा नया जन्म का अनुभव पा सकते है। बिना उसके अनुभव के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नही कर सकते है।

यीशु पृथ्वी में सेवा करते समय नीकुदेमुस नाम का एक यहूदियों का सरदार रात में आकर, उससे कहा, ''हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नही सकता। यदि कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह

आत्मा है (यूहन्ना 3:2,3,5)।

जो माँ के गर्भ से जन्म लेता है, वह शरीर से जन्मा है। शरीर से जन्मा शरीर की बातों में मन लगाता है। आत्मा से जन्मा आत्मा की बातों में मन लगाता है। अगर अब तक शरीर पर ही मन लगाये है तो अब तक आत्मा से नही जन्मे है। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पातें हो।

आत्मा से जन्म लेने के लिये परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर, आत्मा पाने की इच्छा रखना जरूरी है। सिर्फ इच्छा करना प्रयाप्त नही अपितु आत्मा की ओर से जन्म लेने के लिये परमेश्वर से माँगना जरूरी है। प्रभु ने कहा, ''माँगों, तो तुम्हें दिया जाएगा'' (मत्ती 7:7)। जो शरीर पर मन लगाते है, वे शरीरिक वस्तुऐं ही माँगते रहते है। उस से ज्यादा कुछ नही माँगते है। इसलिये प्रभु कहता है, शरीर पर मन लगाना मृत्यु है पर आत्मा में मन लगाना अनन्त जीवन है। जब स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहते है, तो ये अर्थात् पृथ्वीय की सब वस्तुएँ भी मिल जाएँगी। अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा ? (लूका 11:13)।

''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेगी'। उसने (यीशु) यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे (यूहन्ना 7:37-39)। इसका अर्थात् यह है, पवित्र आत्मा की भरपूरी पाने के लिये प्यास के संग माँगना ही प्रयाप्त नही अपितु विश्वास से पिता परमेश्वर से माँगना है। तब पिता परमेश्वर यीशु के द्वारा पवित्र आत्मा की बपतिस्मा देगा। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने गवाही दी, ''मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। मैं तो उसे पहिचानता नही था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, ''जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है (यूहन्ना 1:32,33)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु के बारे में गवाही दी।

पवित्र आत्मा की अभिषेक प्रभु यीशु के द्वारा से ही मिलेगी। इसलिये प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना जरूरी है कि परमेश्वर ने जगत के उद्धार के लिये यीशु को भेजा। उसकी के द्वारा ही पाप की क्षमा, रोग, बिमारी, बलहीन, श्राप से मुक्ति मिलती है। उसके माध्यम से पवित्र आत्मा का अभिषेक मिलता है। जूआ को तोड़ने के लिये परमेश्वर ने यीशु का नाम, यीशु का लहू और पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रदान किया है। जिसके द्वारा से सारे जूआ से आप छुटकारा पा सकते है। आपको मात्र विश्वास के द्वारा यीशु का नाम उपयोग करना है। जिसके द्वारा से रोग, बिमारी, बलहीनता, दुष्ट आत्माओं, शैतानी गतिविधियों से छुटकारा प्राप्त कर पायेंगे।

यीशु मसीह के लहू को विश्वास के संग उपयोग करने से जादु-टोना, ईष्या, श्राप से मुक्त हो पायेंगे। क्योंकि लिखा है, ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है। मसीह हमारे लिये

शापित बना'' (गला. 3:13)। यीशु का लहू जो क्रूस से बहता है उसे विश्वास के संग उपयोग करने से श्राप का जूआ टूट जाता है और यीशु का लहू हरेक महामरी, महारोग, ईष्या, श्राप से सुरक्षा प्रदान करती है।

परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक कियाः वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था (प्रेरितो. 10:38)। जब आप भी पवित्र आत्मा से अभिषेक पायेंगे, तो आपका जूआ टूट जायेगा और आप दूसरों की भलाई करेंगे और शैतान के सताए हुओ को अच्छा करेंगे। जब तक आप पवित्र आत्मा के अभिषेक की भरपूरी नही पायेंगे, तब तक विश्वास एवं प्यास के संग माँगते रहे। परमेश्वर निश्चय आपको पवित्र आत्मा की अभिषेक से भरपूर करेगा।

यहेजकेल नबी की किताब में पढ़ते है, ''जल टखनों तक था, फिर वह घुटनों तक था, और जल कमर तक था, फिर जल बढ़कर तैरने के योग्य था। नदी के दोनों किनारों पर भाँति भाँति के खाने योग्य फलदायी वृक्ष उपजें, जिनके पत्ते न मर्झाएगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उनमें महीने महीने नये–नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के और पत्ते औषधि के काम आएँगी (यहेज. 47:1–12)। जो पवित्र आत्मा के अभिषेक से भरपूर होते है, उन से पवित्र आत्मा का फल प्रकट होता है (गला. 5:22–23) और उनके द्वारा अद्भुत वरदान प्रकट होते है, जिससे लोगों को चंगाई मिलती है, जैसे वृक्ष का पत्ते औषधि का काम करता है। उसी के अनुरूप दर्शन यीशु के शिष्य यूहन्ना ने अपने प्रकाशान एवं दर्शन में पाया, जो प्रकाशितवाक्य 22 वें अध्याय के 2 वचन में लिख रखा है।

यही जल पवित्र आत्मा के अभिषेक के बारे में उल्लेख करता है। यह जल एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा। ऐसे जल देने के बारे में यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा किया था (यूहन्ना 4:14) । 'जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा न होगा'। पवित्र आत्मा का अभिषेक जल के समान हमारे प्यास को बूझायेंगा, जो अनन्त तक हमारे अन्दर उमण्डता रहेगा।

सेनाओं का यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूगा, और तुम्हारे बन्धनों को टूकड़े–टूकड़े कर डालूँगा (यिर्म. 30:8), और 'अब मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा, और तेरा बन्धन फाड़ डालूँगा' (नहूम 1:13) ।

आपके ऊपर रहने वाले जूआ तोड़ डालूँगा, यह प्रतिज्ञा परमेश्वर ने आपसे किया है। इसलिये आपको यीशु का नाम, यीशु का लहू और पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रदान किया है, ताकि आप सारी जूआ को तोड़ सके। परमेश्वर आपको अपने ऊपर रहने वाले जूआ तोड़ने में मद्द करेगा। आमीन्।

प्रश्नावली - 21 *के उत्तर*

1) महिमा, सद्‌गुण – 2 पतरस 1:3, 2) अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने को भली भाँती – 2 पतरस 1:10, 3) डेरे, शीघ्र – 2 पतरस 1:14, 4) पवित्र आत्मा, परमेश्वर – 2 पतरस 1:21, 5) स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया – 2 पतरस 2:4, 6) भक्तों को परीक्षा में से, अधर्मियों को न्याय के दिन तक – 2 पतरस 2:9, 7) हार, दास – 2 पतरस 2:19, 8) जल, जल – 2 पतरस 3:5, 9) जलाए जाएँ – 2 पतरस 3:7, 10) नष्ट, मन फिराव – 2 पतरस 3:9, 11) चोर के समान – 2 पतरस 3:10, 12) काम – 2 पतरस 3:10, 13) आग से पिघल – 2 पतरस 3:12,14) उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें – 2 पतरस 3:15, 15) प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान – 2 पतरस 3:18.

बाईबल प्रश्नावली - 22

सभी प्रश्न 1 यूहन्ना की पत्री से लिये गये है। इन प्रश्नों का उत्तर, अध्याय एवं आयत की संख्या के संग 20 जून से पहले लिखकर भेजे।

1. परमेश्वर.....है उसमें कुछ भी.....नही।
2. हम अपने.....को मान लें, तो वह हमारे.....को क्षमा करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।
3. तुम न तो.....से और न.....में की वस्तुओं से प्रेम रखो।
4. तुम्हारा किससे अभिषेक हुआ है ?
5. कौन परमेश्वर से जन्मा है ?
6. कौन पाप नही करता है ?
7. हम.....और.....ही से नही, पर.....और.....के द्वारा भी प्रेम करें।
8. परमेश्वर की ओर से हैं या नही किसने परखा है ?
9. परमेश्वर से प्रेम रखने वाले क्या करते है ?
10. संसार पर किस के द्वारा जय प्राप्त करते है ?
11. यीशु मसीह किसके द्वारा आया ?
12. परमेश्वर हमारी कब सुनता है ?
13. दुष्ट किसे छूने नही पाता है ?
14. परमेश्वर किससे बड़ा है, और क्या जानता है ?
15. तुम्हें कौन सिखाता है ?

शत्रु का शत्रु बनूँगा

बहन ज्योस्फीन डेनियल

प्रियों! गिनती 24:5 में ''बोर के पुत्र बिलाम इस्राएल को आशीष देने वाला वचन, 'हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इस्राएल, तेरे निवासस्थान क्या ही मनभावने है'। हाँ, इस्राएलियों को आशीष करना परमेश्वर को पसन्द है। बिलाम एक भाविष्यवाक्ता था। मोआबी राजा बालाक ने बिलाम नबी को इसलिये बुलाया ताकि वह इस्राएलियों को श्राप दें। बिलाम ने राजा बालाक से कहा, 'जो परमेश्वर कहेगा, उसी को कहूँगा कहकर राजा के पास आया।

जिन्हें परमेश्वर श्राप न दें, उन्हें कैसे श्राप दें:- राजा बालाक ने भोर में बिलाम को बाल के ऊँचे स्थानों में चढ़ा ले गया; और वहाँ से उसको सब इस्राएली लोगों को दिखाया (गिनती 22:41)। बाल का मतलब मूर्ती। इस मूर्ती के ऊँचे स्थानों पर बिलाम चढ़ा। बिलाम परमेश्वर का नबी था। बिलाम मूर्ती के ऊँचे स्थानों पर चढ़ना, परमेश्वर को पसन्द नही था। बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बाँधकर, उसके ऊपर बैठकर मोहबी हाकिमों के संग चल पड़ा। यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया और उसकी गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा, तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा की वह मार्ग पर फिर आ जाए। तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ। यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई कि बिलाम का पाँव दीवार से दब गया; तब उसने उसको फिर मारा। तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकरे स्थान पर खड़ा हुआ, जहाँ न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाई ओर। वहाँ यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये-लिये बैठ गई; फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही को लाठी से मारा। तब यहोवा ने गदही का मुँह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, ''मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे तीन बार मारा?'' (गिनती 22:24-28)।

बिलाम गदही ने यहोवा के दूत को देखा, लेकिन बिलाम उसे नही समझता था। गदही बोलने के बाद यहोवा ने बिलाम के आँखों को खोला, बिलाम ने यहोवा के दूत को देखकर दण्डवत् किया। यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, 'मैं तुझ से कहने वाला ही वचन कहना। उसके उपरान्त ही बिलाम वहाँ पर गया। बिलाम और बालाक सात वेदियाँ में सात बछड़े और सात मेढ़ा चढ़ाया। सम्भव है कि यहोवा मुझ से भेंट करने को आए, कहकर एक मुण्डे पहाड़ पर चढ़ा। वहाँ पर परमेश्वर ने बिलाम से भेंट कर कहा, मैं जो मुँह में एक बात डालूँगा, और ''बालाक के पास लौट जा, और यों कहना'। जिन्हें परमेश्वर ने शाप नहीं दिया उन्हें मैं क्यों शाप दूँ? और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूँ? याकूब के धूलि के किनके को कौन गिन सकता है, या इस्राएल की चौथाई की

गिनती कौन ले सकता है ?

बालाक श्राप देने को बिलाम को बुलाया, लेकिन श्राप देने वाले मुँह से परमेश्वर ने आशीष के वचन दिया। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति जलन रखता है। इसे पढ़ने वाले, प्रियों! परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किया है तो कितना वर्ष, पीढ़ी क्यों न बित जाये, लेकिन उस प्रतिज्ञा को पूरा करने में वह विश्वासयोग्य है।

अब्राहम को परमेश्वर ने बुलाया, तब वह परमेश्वर को नही जानता था, लेकिन परमेश्वर की बातों पर विश्वास करा। आज्ञा मानकर उस स्थान को चला गया, जिस स्थान को जाने को परमेश्वर ने कहा था। परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा किया, 'मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा; और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा। इस्राएल को आशीष देना ही परमेश्वर को पसन्द है, इसे बालाक समझने के लिए बिलाम के द्वारा परमेश्वर ने आशीष दी।

बालाक ने बिलाम को बुलाकर दूसरी दिशा से इस्राएलियों को श्राप देने को बली चढ़ाया और श्राप देने को कहा, यहोवा बिलाम से भेंटकर उसके मुँह में वचन दिया। जो वचन परमेश्वर ने दिया, 'कोई मंत्र याकूब पर नही चल सकता, और इस्राएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता' (गिनती 23:23)। इसे सुनकर बालाक ने कहा, तू उन्हें न आशीष दें और न श्राप दें।

बालाक ने बिलाम को बुलाकर फिर दूसरी दिशा से इस्राएलियों को श्राप देने को कहा, बिलाम के ऊपर परमेश्वर की आत्मा आई, उसका आँख खुल गया, और उसने कहा, ''हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इस्राएल, तेरे निवासस्थान क्या ही मन भावने है! वह तो बनैले साँड के समान बल रखता है, जाति जाति के लोग जो उसके द्रोही हैं उनको वह खा जायेगा, और उनकी हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा, और अपने तीरों उनको बेधेगा। जो कोई तुझे आशीवार्द दे वह आशीष पाए; और जो कोई तुझ शाप दे वह शापित हो''(गिनती 24:5,8,9)।

इस्राएलियों के संग परमेश्वर रहने से कोई भी सेना उन्हें हार न सकी। इस्राएलियों के संग परमेश्वर रहता है, इसे जानने वाला बिलाम ने बालाक राजा को सलाह दिया, इस्राएलियों से व्यभिचार, मूर्ती पर चढ़ाने वाले भोज खिलाये, मूर्ती का दण्डवत् करवाये जिसे परमेश्वर घृणा करता है।

इस्राएली शित्तीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे। और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे। यों इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा (गिनती 25:1–3)। यहोवा ने इस्राएलियों के बीच में महामरी भेजा। और मरी से चौबीस हज़ार मनुष्य मर गए।

प्रकाशितवाक्य 2:14,16,17 में पढ़ते है, पिरगमन कलीसिया के दूत का दर्शन पाकर यूहन्ना उस कलीसिया को लिखता है, जिसके पास दोधारी और तेज तलवार है, वह कहता हैः मुझे तेरे विरूद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहाँ कुछ ऐसे हैं, जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई

गई वस्तुएँ खाएँ और व्यभिचार करें। अतः मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। इसी युद्ध को हम गिनती की किताब 25वें अध्याय में देखते है, जब इस्राएली जन मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे और उनके मूर्ती को दण्डवत् करने से मरी आयी। यह मरी रूकने के लिये हारून याजक का पोता एलीआजार का पुत्र पीनहास, जिसने उस इस्राएली पुरूष और स्त्री को जो कुकर्म कर रहे थे, उन दोनों के पेट में बरछी भेद दी। इसके कारण इस्राएलियों में जो मरी फेल गई थी वह थम गई।

दोधारी तलवार परमेश्वर का वचन है; इसे इब्रानियों 4:12 में पढ़ते है। यह उपदेश देने वालो और सुनने वालों को आर-पार छेदता है। हमारा परमेश्वर प्रेम एवं भलाई करने वाला है, इसलिये अपने एकलौते पुत्र को जीवित बलीदान के लिया सौपा। लेकिन वह पाप नही देखता है। परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाकर प्रतिज्ञा दिया, इसे स्मरण कर उसकी पीढ़ी को मिस्त्र की गुलामी से छुड़ाकर, उन्हें आज्ञाएँ दिया, 'मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी को प्रतिमा बनाना जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल हैं; तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जल़न रखनेवाला ईश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हज़ारों पर करूणा किया करता हूँ' (व्यवस्था. 5:7-10)। फिर भी इस्राएलियों ने परमेश्वर के वचन का पालन न कर गलती किया, जिसके कारण मरी फैलना शुरू हो गयी।

परमेश्वर के प्रति जल़न रखने वाला पीनहास ने गलती करने वालो को भेद़ने से इस्राएलियों में फैली हुई मरी थम गई।

इसे पढ़ने वाले प्रियों! दोधारी तलवार रखने वाला परमेश्वर की वाक्य है, 'मन फिरावों और परमेश्वर के प्रति भक्ति एवं जल़न रखों। बाईबल में 1 पतरस 4:17,18 में पढ़ते है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए; और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नही मानते ? और ''यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनाई से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकना ?'' इसलिये वर्तमान में फैलने वाली मरी थमना है, तो मन फिरा कर परमेश्वर के कार्यो पर जल़न रखना है। परमेश्वर के लिये जल़न रखते समय प्रभु प्रकाशितवाक्य 2:17 में कहते है, ''मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा।

सम्पूर्ण विश्व भर में देखते है, यीशु मसीह के दूसरे आगमन की भविष्यवाणी पूरी होती जा रही है। मत्ती 24:14 में लिखे हुए वाक्य के समान अन्त निकट है। पवित्र बाईबल कहता है, 'जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बाँग देने के समय या भोर को। ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ: जागते रहो (मर. 5:7-10)।

प्रियों! चुनना आपके हाथ में है कि परमेश्वर के लिये जल़न रखकर जीवन जीयेंगे, तो प्रभु यीशु के आगमन में उसके संग जा सकेंगे अन्यथा उसके कोप के भागी होगें। आपको ही निर्णय लेना है कि उसके आगमन के लिये तैयार रहें और दूसरों को भी तैयार करें। प्रभु आपके अन्दर में परमेश्वर के प्रति जल़न के संग जीवन जीकर उसके आगमन में साभागी होने में मद्त करें। आमीन्।

जरूरतें

1. VBS प्रोग्राम 50 विभिन्न स्थानों में आयोजित करने जा रहे है, जिसका प्रत्येक क्षेत्र का खर्च रू.5,000/– आयेगा। कुल खर्च रू.2,50,000/– आयेगा।
2. प्रत्येक मिशनेरी परिवार की सहायता राशी रू.5,000/– है।
3. मिशनेरी बच्चों की पढ़ाई का खर्च रू.1,000/– है।

इन सभी जरूरतों के लिये प्रार्थना के संग मद्द करें। जिसके द्वारा आप हमारे संग मिलकर प्रभु परमेश्वर की राज्य की बढ़ौतेरी में सहयोगी रहेंगे। जिसका प्रतिफल परमेश्वर आपको इस पृथ्वी में जरूर प्रदान करेगा। क्योंकि 'हर्ष से देने वालो से परमेश्वर प्रिय रहता है'। आप हर्ष से अपना अनुदानों को बैकों के द्वारा भेज सकते हैः–

You can scan & donate

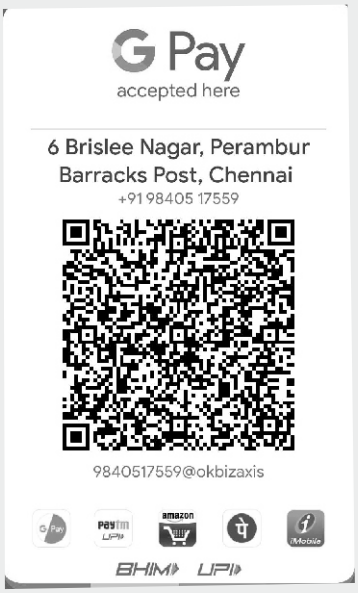

Dhaya Ministries and Charitable Trust

STATE BANK OF INDIA	Or	UNION BANK OF INDIA
A/c. No. 30916103538		A/c. No. 527102010312844
IFS Code: SBIN0001515		IFS Code: UBIN0552712

Address: T8/510, Sagar Lake View Homes, Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022

Visit us:www.dhayaministries.org, Email:info@dhayaministries.org

पुस्तक मौजूद है

1. **'परिवारिक जीवन की मधुर रहस्य'** – यह पुस्तक परिवार के सलाह पर आधरित लिखी गई है। जिसके द्वारा आपका परिवार आशीषित हो, और आपका परिवारिक जीवन मधुर के संग जीने के लिये उपयोगिक है। इसका मूल्य मात्र रू.25/– है।

2. **'गीत की किताब'** – इस पुस्तक में 150 गीत, 100 स्तुति, 11 विशेष प्रार्थना, 25 प्रतिज्ञा और प्रत्येक दिन बाईबल ध्यान करने वाला पाठ भी संग्लन है। इसका मूल्य मात्र रू.50/– है।

यदि आप पुस्तकें प्राप्त करना चाहते है तो पुस्तक की मूल्य संग पोस्ट का खर्च रू.50/– के संग भेजे। इसका मूल्य QR Code Scan कर भेजे या मनीआर्डर / डी.डी. / चेक / ऑन लाईन DHAYA MINISTRIES & CHARITABLE TRUST क बैक के नाम से भेजकर पुस्तक प्राप्त कर सकते है।

मिश्न समाचार

स्तुति का विषय

1. बिना रूकावटें से मिश्न फिल्ड्रों में प्रार्थना सभायें चलाने में प्रभु परमेश्वर ने मद्द की। प्रभु की स्तुति हो।
2. बिना किसी रूकावट से 7 बाईबल, 15 नया नियम, 110 टक्स वितरण करने में प्रभु परमेश्वर ने सहायता की। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
3. बिना किसी रूकावट से 7 जनों को बपतिस्मा देने में प्रभु ने मद्द की। प्रभु की स्तुति हो।
4. मालती और गुल्टाबाई पेट दर्द से पीड़ित थी, प्रार्थना से वे चंगी हुई। प्रभु का धन्यवाद हो।
5. सुखवत्ती बाई को लहू बहने से पीढ़ित थी, प्रार्थना के द्वारा से वह चंगी हुई। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
6. भागाबाई पागल थी, उसका मन ठीकने पर न था, प्रार्थना से वह ठीक हो गई। प्रभु का धन्यवाद हो।
7. अमित मृगी की बिमारी से ठीक हो गई। प्रभु की स्तुति हो।
8. सोमनाथ सीने के दर्द से पीढ़ित थे, प्रार्थना के माध्यम से ठीक हो गये। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
9. करेंगांव की कलीसिया में 26 नये लोग जुड़ें। प्रभु की स्तुति हो।
10. जांजगीर में 14 नये लोग जुड़े। प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद हो।
11. मानकी बिमारी से ठीक होने से प्रभु में आ गई। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
12. लिला बाई पहले परमेश्वर के वचनों का विरोध में कार्य करती थी, लेकिन उसका बच्चा ठीक होने से उसके अन्दर विश्वास आ गया। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
13. मिश्न फिल्ड्रों में बिना रूकावटों से आराधना चलाने और सेवायें प्रदान करने में परमेश्वर ने मद्द की। प्रभु की स्तुति हो।
14. सेवकों और मिशनेरीयों की सुरक्षा, आरोग्यता एवं आशीष परमेश्वर ने प्रदान की। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
15. दया सेवकाई से जुड़े – प्रार्थना योद्धाओं, पाठकों, दानदाताओं, सहयोगी परिवारों की जरूरतें पूरी हुई, और सभी को सुरक्षा, आरोग्यता एवं उन्नति मिली। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।

प्रार्थना का निवेदन

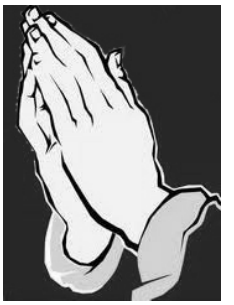

1. कमल सिंग एवं उनके पूरे परिवार प्रभु में बढ़ने के लिये प्रार्थना करें।
2. मानवती एवं उसके पूरे परिवार में आत्मिक उन्नति आने के लिये प्रार्थना करें।
3. आराधना में भाग लेने वाले प्रभु में और उसके वचनों में बढ़ने के लिये प्रार्थना करें।
4. बपतिस्मा के लिये 9 लोग तैयार है, बिना किसी रूकावट से बपतिस्मा होने के लिये प्रार्थना करें।
5. करेंगांव, सेनगुढ़ – इन गाँवों में प्रार्थना भवन की आवश्यकता है, प्रार्थना करें कि चर्च भवन बिना किसी रूकवटों के बनाने पायें।
6. अनुलता को मृगी की बिमारी से छुटकारा मिलने के लिये प्रार्थना करें।
7. भागबाई और सिंगोरी बाई को दुष्ट आत्माऐं से छुटाकारा मिलने के लिये प्रार्थना करें।
8. साधना और तुलसीबाई को सन्तान की आशीषें मिलने के लिये प्रार्थना करें।
9. करेंगांव में बोर करने की आवश्यकता है, जिसके द्वारा पेयजल की सामस्यों का समाधना हो सकें। इन जरूरतों के लिये प्रार्थना करें।
10. शिववती और भगवती को अच्छा बुद्धि एवं ज्ञान मिलने के लिये प्रार्थना करें।
11. दो मिशनेरी के लिये वाहनों की जरूरतें है, इन जरूरतें के लिये प्रार्थना करें।
12. निलेश का दिमाक संतुलन पर नही रहता, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
13. सत्यनारायण को कमर एवं घुटने में दर्द रहता है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
14. रानू बंजारे और अमरीका बाई – इने दोनों पैरों और घुटनों में दर्द रहता है, उनकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
15. जीवन को चक्कर आता है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
16. अंशूमान कर्ज से परेशान है और उसका मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहता है। उसकी चंगाई एवं छुटकारे के लिये प्रार्थना करें।
17. मिशनेरी एवं उनके परिवारों की सुरक्षा, आरोग्यता, उन्नति के लिये प्रार्थना करें।
18. मिश्न फिल्ड़ों में आयोजित करने वाले VBS प्रोग्राम बिना किसी रूकावट से संचालित होने और सारी जरूरतें पूरी होने के लिये प्रार्थना करें।
19. पाठकों, प्रार्थना योद्धाओं, दानदाताओं, सहयोगीयों, कमेटी के सद्स्यों, सेवकों, मिशनेरीयों एवं विश्वासियों की सुरक्षा, उन्नति, आरोग्यता एवं आशीष के लिये प्रार्थना करें।
20. सम्पूर्ण विश्व की देशों में से महामरी की रोक थम एवं सम्पूर्ण रीति से लोगों को चंगाई एवं छुटकारा मिलने के लिये प्रार्थना करें।

''हे प्रभु, मेरी सुन ! तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहे'' – भजन 130:2

प्रार्थना का विषय

1. नव् जवानों के जीवन में परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।
2. जल–तल–वायु की सेनाओं में कार्यारत् की सुरक्षा एवं आरोग्यता के लिये प्रार्थना करें।
3. युवतियों एवं महिलाओं की सुरक्षा के लिये प्रार्थना करें।
4. बेरोजगारी देश भर में से मिटने के लिये प्रार्थना करें।
5. सरकारी एवं गैर सरकारी में कार्यारत् की उन्नति एवं आशीष के लिये प्रार्थना करें।
6. पत्रिका की सेवा और मीड़िया की सेवा में कार्य करने वालों की सुरक्षा, प्रकाशन एवं जरूरतें पूरी होते रहने के लिये प्रार्थना करें।
7. महामरी से लोग बचने के लिये प्रार्थना करें।

सुसमाचार की सभायें
उपवासिक की सभायें
जागृति की सभायें
मिशनेरी भेजना
बाईबल टिचिंग
सेमिनार्स
पत्रिका
रेट्रिट्स
यूथ मिनिस्ट्री
सामाजिक चेतना
मध्यस्था की प्रार्थना
सेवकों को स्फूर्तिवान बनाना

आवश्यक प्रार्थना के लिये
Cell No. 09893141410, 08871452038

Printed Matter only

To.....
.....
.....
.....
.....

Return Requested to:
Post Box No.01
DHAYA JOTHI
Dhaya Ministries
Address : T8/510, Sagar Lake View Homes, Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022